

पढ़ना है समझना

मेरे जैसी







प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)
978-81-7450-879-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्देकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

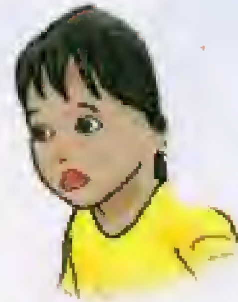
मेरे जैसी



बुआ



दीपा



रानी



मम्मी



एक दिन रानी की बुआ उसके घर आईं।
बुआ साथ में अपनी छोटी-सी बेटी को भी लाईं।
उनकी बेटी का नाम दीपा था।



रानी ने दीपा को अपनी गोद में ले लिया।
रानी दीपा को खिलाने लगी।
दीपा सिर्फ़ एक साल की थी।



रमा भी वहाँ आ गई।
वह भी रानी के साथ खेलने लगी
रमा और रानी ने दीपा को खूब खिलाया।



बुआ बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
मम्मी भी बोलीं कि दीपा रानी जैसी दिखती है।
रानी दीपा को गौर से देखने लगी।



रानी ने दीपा को बिस्तर पर बैठाया।
उसने दीपा की बाँह से अपनी बाँह मिलाकर देखी।
उसे दीपा की बाँह पतली और अपनी बाँह मोटी लगी।



रानी ने दीपा का मुँह खोला।
वह दीपा के दाँत ढूँढ़ने लगी।
दीपा के मुँह में चार ही दाँत थे और रानी के बहुत सारे।



रानी ने अपने पैर दीपा के पैरों से मिलाए।
दीपा के पैर छोटे थे और रानी के बड़े।
दीपा के पैर पतले थे और रानी के मोटे।



रानी ने अपनी उँगलियाँ दीपा की उँगलियों से मिलाईं।
दीपा की उँगलियाँ छोटी थीं और रानी की बड़ी।
दीपा की उँगलियाँ पतली थीं और रानी की मोटी।



रानी ने अपने नाखून दीपा के नाखून से मिलाए।
दीपा के नाखून बहुत नरम और गुलाबी थे।
रानी के नाखून थोड़े सख्त और कम गुलाबी थे।



रानी ने अपनी नाक दीपा की नाक से मिलाई।
रानी अपनी नाक छू-छूकर देख रही थी।
वह नाक मिला कर देख नहीं पाई।



रानी ने दीपा को गोद में उठाया।
वह उसे लेकर बुआ के पास गई।
वहाँ रानी की मम्मी भी थीं।



रानी ने बुआ से कहा कि दीपा उसके जैसी नहीं है।
रानी को दीपा अपने जैसी नहीं लगी।
वह बोली कि दीपा मेरे जैसी नहीं है।



माँ ने रानी को शीशा लाने के लिए कहा।
रानी शीशा लाने अंदर गई।
वह हरे किनारे वाला शीशा लेकर लौटी।

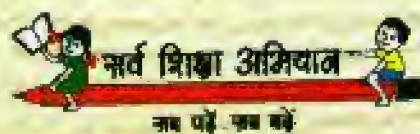


माँ ने रानी से शीशे में देखने के लिए कहा।
उन्होंने दीपा को भी शीशे के सामने खड़ा कर दिया।
रानी अपना और दीपा का चेहरा शीशे में देखने लगी।



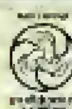
रानी ने ध्यान से शीशे में देखा।
उसे दीपा अपने जैसी ही लगी।
वह सिर हिलाकर बोली कि दीपा मेरे जैसी है।







2078



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING